HISTORY, B.A. Hons II - PAPER II

# CAUSES OF THE DOWNFALL OF NAPOLEON III (नेपोलियन III के पतन के कारण)

इस तथ्य को स्वीकार करने से इन्कार नहीं किया जा सकता कि नेपोलियन III एक महत्वाकांक्षी सम्राट था। शासन में सुधार करने के साथ-साथ व्यापारिक प्रगति तथा साम्राज्य विस्तार के प्रति भी वह जागरूक एवं प्रयत्नशील रहा, परन्तु फिर भी जिसका उदय होता है, उसका अन्त भी निश्चित है। इस सिद्धांत के अनुसार उसका भी पतन हुआ। उसके साम्राज्य के अल्पावधि में हुए पतन के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे :-

(1) **नेपोलियन III की गृह नीति दोषपूर्ण** :- सम्राट होने से पूर्व ही (राष्ट्रपति पद पर रहते हुए) नेपोलियन III ने अपनी जनता के सम्मुख सुधारों का कार्यक्रम रखा तथा उसके वायदे के अनुसार फ्रांस की सुख-समृद्धि में वृद्धि, फ्रांस की जनता के लिए चिकित्सालय, अच्छे मकान आदि की व्यवस्था की। इसके अतिरिक्त सड़कों, बन्दरगाहों, नहरों तथा रेलों की भी व्यवस्था की, परन्तु इतना सब कुछ होने के बावजूद भी वह किसी एक राजनीतिक दल को अपने पक्ष में नहीं कर सका। कैथोलिक दल आरम्भिक समय में पक्षधर होने के बावजूद बाद में विरोधी हो गया। प्रो० पाल फारमर के अनुसार, "राष्ट्रपति बनने के बाद भी वह एक ऐसा नेता था जिसका कोई राजनीतिक दल नहीं था।" उसकी प्रबुद्धता एवं निरंकुशता को जनता ने उपेक्षित किया। उसकी सफलताओं एवं सुधारों से चमत्कृत जनता ने उसकी असफलता एवं राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का ह्रास होने पर उसकी स्वेच्छाचारी नीतियों का विरोध करना आरम्भ कर दिया। बढ़ते हुए विरोध से शासन प्रणाली को अत्यधिक उदार बनाने पर भी जनता संतुष्ट न हो सकी तथा निरन्तर विरोध होता चला गया।

(2) **असफल विदेश नीति** :- अधिकांश इतिहासकारों ने नेपोलियन III की दोषपूर्ण एवं असफल विदेश नीति को ही उसके पतन का प्रमुख कारण माना है। विदेश नीति की दुर्बलताओं के फलस्वरूप यूरोप के अनेक शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र उसके विरोधी हो गए। इटली को स्वतंत्र कराने के लिए उसने जिन अपर्याप्त साधनों का आश्रय लिया, उससे कोई संतुष्ट नहीं था। इटली के एकीकरण के प्रश्न को लेकर पोप के राज्य के लिए उत्पन्न संकट से पादरियों का विरोध भी नेपोलियन III को स्वीकार करना पड़ा। नाइस एवं सेवाय पर अधिकार होने से इंग्लैण्ड से सम्बंध अच्छे न रहे। आस्ट्रिया एवं प्रशा उसके कार्यों से असंतुष्ट थे। सार्डीनिया एवं पीडमाण्ट से मित्रता को लेकर आस्ट्रिया नेपोलियन III से असंतुष्ट था। पोलों को सहायता का वचन देकर भी सहायता न देने से प्रतिष्ठा का ह्रास हुआ। मैक्सिको अभियान में भी वह

Alanta Oxford

असफल रहा। इस प्रकार उसकी विदेश नीति से न केवल फ्रांस की प्रतिष्ठा को धक्का लगा अपितु यूरोप के सभी राष्ट्र उसके विरोधी हो गये तथा अन्त में प्रशा की शक्ति का सामना 1870 ई. में उसे अकेले ही करना पड़ा।

(3) नेपोलियन तृतीय की व्यक्तिगत दुर्बलताएँ:- नेपोलियन महान जैसी प्रतिभा एवं गुणों से रहित होते हुए भी नेपोलियन III राज्य का संचालन करने के लिए नेपोलियन महान् के विचारों को आधार मानकर कल्पित योजनाएं बनाता था जो कि अंत तक अपूर्ण रही। इस के कारण उसकी प्रतिष्ठा का ह्रास तथा फ्रांस में उसके विरुद्ध प्रचार आरम्भ हो गया। राष्ट्रपति बनने से पूर्व उसका अधिकांश जीवन फ्रांस से बाहर व्यतीत हुआ था। अतएव जनता की आकांक्षाओं एवं समस्याओं से वह पूर्णतया परिचित नहीं था। प्रो० कैटलबी ने उसकी अक्षमता के विषय में लिखा है, "उसकी गृह नीति एवं विदेश नीति दोनों असम्बद्ध एवं अविश्वसनीय थीं और वह तत्कालीन समस्याओं को अप्रभावी उपायों द्वारा टालने का प्रयत्न करता था। उसकी महत्वाकांक्षाएं उसके हित एवं सिद्धांत परस्पर विरोधी थे।" राजनीतिज्ञ के गुण, व्यक्तिगत साहस एवं दृढ़ निश्चय रहते हुए भी उसके प्रति लोगों में अनिश्चय की स्थिति बनी रहती थी। भाग्यवाद का समर्थक नेपोलियन III आत्मविश्वास से रहित था। थामसन के शब्दों में, "नेपोलियन III नामधारी होते हुए और उसका अनुसरण करने का दावा करते हुए भी उसमें नेपोलियन महान् जैसे गुण नहीं थे।" नेपोलियन III धोखे व चालबाजी से काम लेता था, किन्तु अधिक समय तक यह नीति नहीं चल सकती थी। महत्वाकांक्षी होने के साथ ही मेहनती होना भी आवश्यक है। नेपोलियन III में इसका अभाव था। थियर्स ने नेपोलियन III के विषय में लिखा है, "फ्रांस की जनता ने नेपोलियन III के सम्बंध में दो गलतियां कीं। पहली बार उन्होंने उसे मूर्ख समझा तथा दूसरी तब जब उन्होंने उसे अति योग्य समझा।"

नेपोलियन III का चरित्र एवं इतिहास में उसका स्थान

नेपोलियन महान युद्ध के प्रति आनन्द का अनुभव करने वाला तथा महत्वाकांक्षी था जबकि नेपोलियन III शान्तिप्रिय तथा प्रजा का शुभचिन्तक था। उसके विषय में कहा जाता है कि, "वह घोड़े की पीठ पर बैठा हुआ सैण्ट साइमन था।" प्रजा की उन्नति

तथा सामाजिक एवं आर्थिक विकास उसके प्रमुख उद्देश्य थे। फ्रांस में आन्तरिक शांति एवं सुव्यवस्था की स्थापना तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसके गौरव में वृद्धि ये दोनों उद्देश्य उसकी परीक्षा की कसौटी थे। अतएव उसने दोहरी नीति का आश्रय लिया, परन्तु वह असफल रहा। वास्तव में नेपोलियन III में गुण-दोषों का सम्मिश्रण था। शासनकाल की आरम्भिक सफलता के साथ ही उसका पतन भी आरम्भ हो चुका था। अवसरवादी होने के कारण ही उसके बिना उचित सैन्य संगठन किये ही प्रशा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। नेपोलियन III विभिन्न योजनाएं बनाता था, किन्तु उन्हें पूरा करने का प्रयत्न नहीं करता था। इसी कारण उसके विषय में कहा जाता है कि "उसका व्यक्तित्व आकर्षित तो करता है, परन्तु प्रभावित नहीं करता।"

नेपोलियन III का यूरोप के इतिहास में विशेष स्थान है। नेपोलियन के नाम के लिए यूरोप की जनता में पर्याप्त आकर्षण था। यूरोप की राजनीति में सक्रिय भाग लेने के बाद भी उसे असफलता मिली, जिसके फलस्वरूप उसके साम्राज्य का पतन हो गया। नेपोलियन III के चरित्र एवं कार्यों के विषय में विद्वानों में परस्पर मतभेद है। वास्तव में नेपोलियन III के स्थान का निर्धारण काना एक पहेली की भाँति दुष्कर कार्य है। इसी कारण एडवर्ड्स ने उसके विषय में लिखा है, "वह एक ऐसा अजीब व अन्धा पहेली था जिसके शरीर का आधा भाग शेर का व आधा स्त्री का था।" हेज ने उसकी प्रशंसा करते हुए लिखा है, "तत्कालीन यूरोपीय राजनीतिज्ञों में नेपोलियन III सबसे महान् था। उसके चरित्र तथा साम्राज्य की कथा 19वीं शताब्दी के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।"

30.9.2020